VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS

+918988885050
+918988886060

www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

TODAY'S ANALYSIS
(आज का विश्लेषण)
(04 April 2025)

Sources:

The Hindu, The Indian Express, The Economics Times & PIB

Important News:

- भारत और थाईलैंड ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाया
- बिम्सटेक (BIMSTEC) शिखर सम्मेलन के लिए, प्रधानमंत्री का थाईलैंड दौरा
- ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम (GCP) क्या है, और इससे जुड़ी आलोचनाएं क्या है?
- MCQ

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारत और थाईलैंड ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को 'रणनीतिक साझेदारी' तक बढ़ाया:

चर्चा में क्यों है?

- भारत और थाईलैंड ने 3 अप्रैल को अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया, क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनके थाईलैंड के समकक्ष पैतोंगतार्न शिनवात्रा ने व्यापार और निवेश को बढ़ाने और रक्षा, सुरक्षा और साइबर अपराधों और मानव तस्करी का मुकाबला करने में सहयोग को मजबूत करने के तरीकों की खोज की।

- दोनों नेताओं की उपस्थिति में छह समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, जिनमें भारत-थाईलैंड रणनीतिक साझेदारी की स्थापना, डिजिटल प्रौद्योगिकियों पर समझौता ज्ञापन, लोथल (गुजरात) में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC), सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम तथा पूर्वोत्तर भारत में सहयोग शामिल हैं।

- उल्लेखनीय है कि थाईलैंड दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) में भारत के प्रमुख भागीदारों में से एक है और भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति के ढांचे के भीतर द्विपक्षीय रक्षा और सुरक्षा सहयोग लगातार बढ़ा है।

थाईलैंड भारत की एक्ट ईस्ट और हिंद-प्रशांत नीतियों के लिए महत्वपूर्ण:

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने थाईलैंड के साथ संबंधों को मजबूत करते हुए आसियान एकता और हिंद-प्रशांत के प्रति भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के प्रति भारत के रणनीतिक दृष्टिकोण में थाईलैंड का "विशेष स्थान" है, जो भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और व्यापक हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत 'विकासवाद' में विश्वास करता है, 'विस्तारवाद' में नहीं। उनके अनुसार दोनों देश हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक स्वतंत्र, खुले, समावेशी और नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन करते हैं।

भारत-थाईलैंड द्विपक्षीय संबंधों का संक्षिप्त विवरण:

- उल्लेखनीय है कि भारत और थाईलैंड एक दूसरे के विस्तारित पड़ोस में स्थित हैं और अंडमान सागर में समुद्री सीमा साझा करते हैं। थाईलैंड के साथ भारत के

द्विपक्षीय संबंध इतिहास, सदियों पुराने सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों और व्यापक लोगों के बीच संपर्क पर आधारित हैं। समकालीन समय में, दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध 1947 में स्थापित हुए थे और दोनों पक्षों ने 2022 में राजनयिक संबंधों की स्थापना की 75वीं वर्षगांठ मनाई।

- दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंध बहुआयामी हैं और व्यापार और निवेश, रक्षा और सुरक्षा, संपर्क, संस्कृति और पर्यटन, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित कई क्षेत्रों को कवर करते हैं।
- इसके अलावा, थाईलैंड की 'एक्ट वेस्ट' नीति भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति का पूरक है। थाईलैंड भारत का समुद्री पड़ोसी के साथ-साथ क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय समूहों के संदर्भ में, भारत का एक महत्वपूर्ण साझेदार है, जिसमें आसियान, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS), बिम्सटेक, मेकांग गंगा सहयोग (MGC) और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) शामिल हैं।

भारत-थाईलैंड व्यापार एवं निवेश संबंध:

- अप्रैल 2022-सितंबर 2024 तक 1.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर की संचयी FDI राशि के साथ थाईलैंड भारत में FDI इक्विटी प्रवाह में 27वें स्थान पर है।

- हाल के वर्षों में भारत और थाईलैंड के बीच द्विपक्षीय व्यापार में कई गुना वृद्धि हुई है। भारत के वाणिज्य विभाग के अनुसार, वित्त वर्ष 2023-2024 की अवधि के दौरान, थाईलैंड भारत का 21वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था, जिसका कुल द्विपक्षीय व्यापार लगभग 14.94 अरब डॉलर था। आसियान क्षेत्र में, सिंगापुर, इंडोनेशिया और मलेशिया के बाद थाईलैंड भारत का चौथा सबसे बड़ा व्यापार साझेदार है।

वित्त वर्ष 2023-24 में भारत से थाईलैंड को निर्यात:

- वित्त वर्ष 2023-24 में थाईलैंड को भारत का निर्यात 5.03 अरब डॉलर रहा। इसमें भारत से थाईलैंड को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में इंजीनियरिंग सामान (1.8 अरब डॉलर), मोती, कीमती या अर्ध-कीमती पत्थर (723 मिलियन डॉलर), कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन (372 मिलियन डॉलर), समुद्री उत्पाद (281 मिलियन डॉलर), दवा निर्माण, जैविक (271 मिलियन डॉलर), इलेक्ट्रॉनिक सामान (217 मिलियन डॉलर), मसाले (193 मिलियन डॉलर) आदि शामिल हैं।

वित्त वर्ष 2023-24 में भारत का थाईलैंड से आयात:

- वित्त वर्ष 2023-24 में थाईलैंड से भारत का आयात 9.90 अरब डॉलर रहा। इसमें थाईलैंड से भारत द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में परमाणु रिएक्टर,

बॉयलर, मशीनरी और यांत्रिक उपकरण (1.50 अरब डॉलर), इलेक्ट्रॉनिक्स घटक (1.34 अरब डॉलर), प्लास्टिक कच्चे माल (1.29 अरब डॉलर), कार्बनिक रसायन (790 मिलियन डॉलर), मोती, कीमती और अर्ध-कीमती पत्थर (712 मिलियन डॉलर) आदि शामिल हैं।

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC):

- भारत की समुद्री विरासत बहुत समृद्ध है और सबसे पुराने समुद्री साक्ष्य लगभग 4500 साल पुराने हैं। भारत की समृद्ध और विविध समुद्री विरासत को प्रदर्शित करने के लिए, बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) ने अहमदाबाद के पास लोथल में एक राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC) के विकास की कल्पना की है। NMHC न केवल भारत भर से प्राचीन से आधुनिक समय तक की विविध और समृद्ध कलाकृतियों को संग्रहित और प्रस्तुत करेगा, बल्कि जनता को प्रेरित भी करेगा और उन्हें हमारी शानदार समुद्री विरासत के बारे में जागरूक और शिक्षित भी करेगा।
- उल्लेखनीय है कि 7,520 किलोमीटर लंबी तटरेखा वाला भारत दुनिया की सबसे पुरानी ज्ञात सभ्यता, सिंधु घाटी सभ्यता का घर है। यद्यपि सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित स्थल विशाल क्षेत्र में फैले हुए हैं, फिर भी लोथल में ही सबसे पहला

मानव निर्मित गोदी-गृह 1957 में लोथल, गुजरात में उत्खनन के दौरान खोजा गया था।

- पुष्ट पुरातात्विक साक्ष्यों से यह साबित हो गया है कि हड़प्पावासियों का समुद्री व्यापार और सांस्कृतिक संबंध भारतीय समुद्र तट से भी आगे तक फैले हुए थे। तब से समुद्री सम्पर्क की यह परंपरा पश्चिमी तट और पूर्वी तट दोनों से जारी रही है। पश्चिम में मेसोपोटामिया और मिस्र से लेकर सुदूर पूर्व में जापान तक इसके संबंध पाए गए हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

बिम्सटेक (BIMSTEC) शिखर सम्मेलन के लिए, प्रधानमंत्री का थाईलैंड दौरा:

चर्चा में क्यों है?

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 अप्रैल को छठे बिम्सटेक (बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए दो दिवसीय यात्रा पर थाईलैंड पहुंचे।
- उल्लेखनीय है कि जिस दिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दुनिया भर के देशों पर टैरिफ की झड़ी लगा दी, उसी दिन विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बिम्सटेक की मंत्रिस्तरीय बैठक को संबोधित किया और देशों के बीच आत्मनिर्भरता और विविधता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "वास्तविकता यह है कि दुनिया आत्म-सहायता के युग की ओर बढ़ रही है। हर क्षेत्र को खुद पर ध्यान देने की जरूरत है, चाहे वह खाद्य, ईंधन और उर्वरक आपूर्ति, टीके या त्वरित आपदा प्रतिक्रिया हो"।

बिम्सटेक (BIMSTEC) क्या है?

- 'बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (BIMSTEC)' एक क्षेत्रीय संगठन है जिसकी स्थापना 06 जून 1997 को बैंकॉक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर के साथ हुई थी।
- बिम्सटेक (BIMSTEC) में बंगाल की खाड़ी क्षेत्र के देश शामिल हैं और यह दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करना चाहता है। मूल रूप से 1997 में BIST-EC (बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड आर्थिक सहयोग) के रूप में गठित, म्यांमार के शामिल होने के बाद यह BIMST-EC बन गया और 2004 में नेपाल और भूटान के साथ BIMSTEC बन गया।
- बिम्सटेक का संस्थागत विकास क्रमिक रहा है। 2014 में तीसरे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में एक निर्णय के बाद, उसी वर्ष ढाका, बांग्लादेश में बिम्सटेक सचिवालय की स्थापना की गई, जो सहयोग को गहरा करने और बढ़ाने के लिए एक संस्थागत ढांचा प्रदान करता है।
- एक क्षेत्र-संचालित समूह होने के नाते, बिम्सटेक के भीतर सहयोग ने शुरुआत में 1997 में छह क्षेत्रों (व्यापार, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन और मत्स्य पालन) पर ध्यान केंद्रित किया था और 2008 में कृषि, सार्वजनिक स्वास्थ्य,

गरीबी उन्मूलन, आतंकवाद-निरोध, पर्यावरण, संस्कृति, लोगों से लोगों के बीच संपर्क और जलवायु परिवर्तन को शामिल करते हुए इसका विस्तार हुआ।

बिम्सटेक का महत्व या उपयोगिता क्या है?

- ऐसे समय में जब सार्क कमोबेश निष्क्रिय या मृतप्राय हो गया है, यह दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के लिए एक साझा मंच प्रदान करता है। ध्यातव्य है कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन (आसियान) को दुनिया के सबसे अधिक एकजुट समूहों में से एक माना जाता है, भारत-पाकिस्तान के तनावपूर्ण संबंधों में आगे की गति की कमी ने दक्षिण एशियाई देशों के लिए बहुत कम विकल्प छोड़े हैं।
- साथ ही भूमि से घिरे देश नेपाल और भूटान भी बिम्सटेक देशों के साथ बेहतर संबंधों के परिणामस्वरूप बंगाल की खाड़ी तक पहुंच से लाभान्वित हो सकते हैं।
- उल्लेखनीय है कि चीन इस समीकरण का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसने पिछले दशक में भूटान और भारत को छोड़कर लगभग सभी बिम्सटेक देशों में बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण और निर्माण के लिए एक बड़े पैमाने पर अभियान चलाया है।

- ऐसे में बिम्सटेक एक संगठित क्षेत्रीय मंच के रूप में भारत को चीनी निवेश का मुकाबला करने के लिए एक रचनात्मक एजेंडा आगे बढ़ाने की अनुमति दे सकता है, और बंगाल की खाड़ी को दक्षिण चीन सागर में चीन के व्यवहार के विपरीत खुला और शांतिपूर्ण बनाया रखा जा सकता है।

चुनौतियां:

- बांग्लादेश और म्यांमार के बीच चल रहे विवादों और शेख हसीना के निष्कासन के बाद भारत और बांग्लादेश के बीच तनाव इस संगठन के समक्ष गंभीर समस्या बनी हुई है। म्यांमार में चल रहे गृहयुद्ध के कारण दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच भूमि पुल के रूप में म्यांमार की क्षमता भी कम हो गई है।
- लेकिन SAARC के विपरीत, जो कभी सही मायने में आगे नहीं बढ़ पाया, BIMSTEC एक धीमी नाव है जो अधिक जुड़ाव की ओर बढ़ रही है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम (GCP) क्या है, और इससे जुड़ी आलोचनाएं क्या है?

परिचय:

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा 2023 में शुरू किए गए ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम (GCP) को इसके शुरू होने से पहले ही कानून और न्याय मंत्रालय ने इसमें शामिल व्यापार मॉडल की वैधता को लेकर आपत्ति जताई थी।

- इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य व्यापार योग्य 'ग्रीन क्रेडिट' के बदले, वृक्षारोपण से लेकर जल संरक्षण तक के क्षेत्रों में स्वैच्छिक भागीदारी को आमंत्रित करना है। वर्तमान में, वृक्षारोपण और बंजर भूमि की पारिस्थितिकी बहाली पर पायलट परियोजना चल रही है।

ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम (GCP) क्या है?

- अक्टूबर 2023 में पर्यावरण मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम (GCP) एक बाजार-आधारित प्रोत्साहन प्रणाली है, जिसका उद्देश्य केवल कार्बन

उत्सर्जन घटाना नहीं, बल्कि पर्यावरण के लिए सकारात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम वृक्षारोपण, जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन जैसी सात गतिविधियों में स्वैच्छिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।

- इन गतिविधियों में भाग लेने वालों को "ग्रीन क्रेडिट" दिए जाएंगे, जिन्हें घरेलू बाजार में खरीदा-बेचा जा सकता है।
- ये क्रेडिट विकास परियोजनाओं में प्रतिपूरक वनीकरण जैसे कानूनी अनुपालन के लिए भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। उदाहरणस्वरूप फरवरी 2024 की अधिसूचना के अनुसार, विकास परियोजनाओं में उपयोग की गई वन भूमि के बदले ग्रीन क्रेडिट का उपयोग प्रतिपूरक वनीकरण के अनुपालन के लिए किया जा सकता है।
- इसके अलावा, सूचीबद्ध कंपनियां इन क्रेडिट का उपयोग सेबी के BRSR (Business Responsibility and Sustainability Report) में पर्यावरणीय प्रयासों को दर्शाने के लिए कर सकती हैं।

ग्रीन क्रेडिट की गणना कैसे की जाती है?

- ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम (GCP) की शुरुआत केंद्र सरकार ने वृक्षारोपण के पायलट प्रोजेक्ट से की थी, जिसे बाद में पारिस्थितिकी-पुनर्स्थापन गतिविधियों जैसे

झाड़ियों, जड़ी-बूटियों, घासों का रोपण, जल संरक्षण आदि तक विस्तारित किया गया।

पायलट योजना के प्रमुख प्रावधान:

- इसके तहत भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE), देहरादून को नोडल प्रशासक नियुक्त किया गया है।
- वृक्षारोपण बंजर भूमि, झाड़ीदार क्षेत्र, खुले जंगल और जलग्रहण क्षेत्रों में किया जाएगा, कम से कम 5 हेक्टेयर के प्लॉट पर। राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के वन विभाग इन भूमि पार्सलों की पहचान करेंगे।
- इच्छुक प्रतिभागियों को ICFRE के साथ पंजीकरण और आवेदन करना होगा। आवेदन शुल्क और प्रक्रिया पूरी होने पर भूमि आवंटित की जाएगी।
- वृक्षारोपण और उसका रखरखाव वन विभाग की जिम्मेदारी होगी, जिसे 2 साल के भीतर पूरा करना होगा।
- प्रति हेक्टेयर कम से कम 1,100 पेड़ों के घनत्व के अनुसार हर पेड़ के लिए एक ग्रीन क्रेडिट दिया जाएगा, स्थानीय जलवायु और प्रमाणीकरण के आधार पर।

4 मार्च 2025 तक की प्रगति:

- 17 राज्यों में 2,364 भूमि पार्सल, कुल 54,669.46 हेक्टेयर क्षेत्र में पंजीकृत।

- 384 संस्थाओं ने भागीदारी के लिए पंजीकरण कराया, जिनमें से 41 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम हैं।

इस योजना की आलोचना क्यों की जाती है?

- उल्लेखनीय है कि उद्योगों को वन भूमि के उपयोग के लिए प्रोत्साहित करने का आरोप लगाया गया है, क्योंकि वे ग्रीन क्रेडिट खरीदकर अपने कानूनी दायित्व, जैसे प्रतिपूरक वनीकरण, पूरा कर सकते हैं।
- साथ ही बंजर भूमि, खुले जंगलों और झाड़ीदार भूमि पर वृक्षारोपण को बढ़ावा देने पर भी आलोचना हुई है, क्योंकि विशेषज्ञ मानते हैं कि ये क्षेत्र अपनी स्वतंत्र पारिस्थितिकी सेवाएं प्रदान करते हैं।
- इस महीने की शुरुआत में, सुप्रीम कोर्ट ने वन संरक्षण अधिनियम में संशोधनों को चुनौती देने वाले एक चल रहे मामले में GCP पर हस्तक्षेप आवेदन पर भी सुनवाई की।
- ध्यातव्य है कि भारत के वन (संरक्षण एवं संवर्धन) अधिनियम, 2023 के अनुसार, यदि उद्योग या विकास परियोजनाएँ वन भूमि का उपयोग करती हैं, तो उन्हें बराबर क्षेत्रफल की गैर-वन भूमि पर प्रतिपूरक वनीकरण करना अनिवार्य है। यदि गैर-वन

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भूमि उपलब्ध नहीं हो, तो बंजर या अवर्गीकृत वन भूमि के दोगुने क्षेत्र पर वनीकरण करना होता है, ताकि "भूमि के बदले भूमि" का सिद्धांत बना रहे।

- GCP (ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम) इसके विपरीत, वृक्षारोपण के लिए क्षरित वन भूमि का उपयोग करता है। साथ ही यह अनुमति देता है कि कंपनियां पैसा देकर ग्रीन क्रेडिट खरीदें और अपने कानूनी वनीकरण दायित्वों को पूरा कर लें। इसका मतलब है कि यह योजना नए वन क्षेत्र बढ़ाने के बजाय पुराने वनों की भरपाई मात्र करती है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

MCQ

Q.1. चर्चा में रहे 'भारत और थाईलैंड के द्विपक्षीय संबंधों' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. भारत और थाईलैंड एक दूसरे के विस्तारित पड़ोस के रूप में समुद्री सीमा साझा करते हैं।
2. थाईलैंड भारत का समुद्री पड़ोसी के साथ-साथ कई क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय समूहों के संदर्भ में, भारत का एक महत्वपूर्ण साझेदार है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

Ans. (c)

Q.2. चर्चा में रहे 'राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) भारत की समृद्ध समुद्री विरासत को प्रदर्शित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा इसके विकास की कल्पना की गयी है।

(b) इसकी स्थापना अहमदाबाद के पास लोथल में की जा रही है।

(c) लोथल में ही सबसे पहला मानव निर्मित गोदी-गृह की खोज 1922 में, लोथल के उत्खनन के दौरान की गयी थी।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

Ans. (b)

Q.3. हाल ही में चर्चा में रहे 'बिम्सटेक' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. बिम्सटेक की स्थापना 1997 में हुई थी।
2. इसके सदस्य देशों में दक्षिण एशिया एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के देश शामिल है।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं ?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (c)

Q.4. चर्चा में रहा 'प्रतिपूरक वनरोपण योजना' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) इस योजना के तहत किसी भी उद्योग को, वन भूमि को गैर-वानिकी उद्देश्यों के लिए उपयोग करने की अनुमति दी गई है।

(b) यह योजना वन भूमि उपयोगकर्ता को, वन भूमि के बराबर गैर-वन भूमि वन अधिकारियों को प्रदान करने और उन्हें उस भूमि पर वनीकरण करने के लिए भुगतान करने के लिए, बाध्य करती है।

(c) इसके तहत कंपनियों को वन पारिस्थितिकी तंत्र के मूल्य की भी भरपाई करनी होगी, जो वन भूमि के विचलन के कारण खो जाता है।

(d) उपर्युक्त सभी कथन सही हैं।

Ans. (d)

Q.5. चर्चा में रहे 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम (GCP)' के तहत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. योजना के तहत, पंजीकृत और अनुमोदित संस्थाएं निम्नीकृत वन और बंजर भूमि के विशिष्ट इलाकों में वनीकरण परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए भुगतान कर सकती हैं।
2. वनीकरण का वास्तविक कार्य उन संस्थाओं द्वारा ही वन विभागों के निर्देशन में किया जाएगा।

उपर्युक्त दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

Ans. (a)